

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

(मुद्रण तारीख :- 23.12.2015)

■ अंक-381 ■ तारीख- 24 दिसम्बर, 2015, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-14 ■ गुरुवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-4 ■ मूल्य -1 रूपया

(पृष्ठ-1)

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)



वही सच्चा भक्त है, जो भगवान की खुशी को अपनी खुशी मानता है। वह हमेशा भगवान को खुशी देना चाहता है, उनके लिए किसी असुविधा का कारण बनना नहीं चाहता! यह मानकर चलना चाहिए कि भगवान की खुशी में ही आपकी खुशी है और आपकी खुशी में भगवान की! एकता की इस भावना को आत्मसात कीजिए।

गुरु ज्ञान का सूर्य

गुरु ज्ञान के प्रखर सूर्य हैं। उनकी किरणों का संस्पर्श पाकर शिष्य रूपी सूर्यमुखी खिल गया, हृदय की कली-कली विकसित हो गई। गुरु ने सिर्फ समाधान का प्रकाश ही नहीं दिया अपितु रोम-रोम में आनन्द की सौरभ भर दी, ऐसा लगने लगा कि शिष्य धरती पर नहीं है, शिष्य के पैर गुरु के सहारे आसमान में चल रहे हैं।

पाप को छोड़ना ही पूर्ण हितकर

संसार दुःखमय है -ऐसा अधिसंख्य लोगों के मुख से सुनने को मिलता है, मगर धार्मिक व्यक्तियों की अभिव्यक्ति यही रहती है कि संसार पापमय है। पापमय संसार छोड़ने योग्य है। जहाँ-जहाँ पाप है, वहाँ-वहाँ दुःख है, वैसे ही जैसे जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ अग्नि है। अतः दुःख छूटने की बजाय पाप को छोड़ना पूर्ण हितकर है - ऐसा धर्माजन कहते हैं।

मानसिक शक्ति



शक्ति, बल का सूचक है। बल या शक्ति मूलतः एक ही है, किन्तु 'करण' भेद से उसके रूप और नाम में भेद और अनेकतायें उत्पन्न हो जाती हैं, जैसे आध्यात्मिक बल, बौद्धिक शक्ति, नैतिक बल, मानसिक बल, शारीरिक बल, प्राणशक्ति आदि-आदि। किन्तु अभी तक मानव का विकास 'नव-तत्व' तक ही होने से, यही इसका प्रधानबल कहा जाता है, यद्यपि भारत की विकसित विचारधारा ने आध्यात्मिक बल को ही सर्वोच्च बल स्वीकार किया है और इस बल या सम्पूर्ण बलों का एकमात्र केन्द्र आत्मा या परमात्मा है, यहाँ की संस्कृति एवं ज्ञान को एकमात्र यही निश्चय और निर्णय सन्तुष्टि और सत्याधार प्रदान करता है।

शहद का खांसी में उपयोग



एक शोध के अनुसार शहद खांसी में किसी दवाई से ज्यादा असरदार होती है। इसमें प्रतिरोधक क्षमता होती है जो खांसी के कीटाणु को नष्ट करती है। यह तरीका बच्चे बड़े सभी पर असरदार होता है, और खाने में टेस्टी होने के कारण सब इसे चाट चाट कर खाते हैं। 1 चम्मच शहद को दिन में 3 बार लें इससे आपको जरूर आराम मिलेगा। रात को सोने से तुरंत पहले जरूर लें इससे आपको सोते वक्त खांसी नहीं आएगी और आप चैन से सो पाएंगे।

अपराध मुक्त गांव बना दौलतपुरा

बांसवाड़ा। अस्थाना पंचायत समिति के अन्तर्गत वखतपुरा ग्राम पंचायत के दौलतपुरा के ग्रामीणों का पुलिस अधीक्षक आनंद शर्मा ने सम्मान किया। दौलतपुरा में सन् 2007 से किसी पर आपराधिक प्रकरण दर्ज नहीं होने को गर्व की बात कहते हुए कहा कि यहां का आपसी भाईचारा मिठास का प्रतीक है। बुजुर्गों एवं युवाओं को आह्वान किया कि वे इस मिठास की सीख अपनी आने वाली पीढ़ी को भी दे जिससे दौलतपुरा गांव अपराध मुक्त रहे। आयोजन के दौरान शर्मा ने यातायात नियमों की जानकारी देते हुए पालना करने में सहयोग की बात कही। यहां के 100 युवाओं का दल बनाकर उपखंड मुख्यालय से वाहन रैली निकालकर यातायात नियमों का क्षेत्र को संदेश देना का संकल्प लिया। एसपी ने कहा- बहुत अच्छी पहल: दौलतपुरा गांव में पहुंचे एसपी ने कहा कि ग्रामीणों द्वारा आपसी विवादों का सुलटारा गांव के चौराहे पर कर लेने का कार्य बहुत ही सराहनीय है। इसके लिए सभी ग्रामीण बधाई के पात्र हैं। एसपी ने कहा कि मुझे बहुत खुशी है। कि पिछले 8 साल से किसी भी विवाद को लेकर कोई मुकदमा थाने में दर्ज नहीं है। जबकि आजकल मामूली बात को लेकर लोग थाने में जाकर मुकदमा दर्ज कराते हैं। साथ ही मैं जानता हूँ कि दो बर्तन साथ रहते हैं तो भी आपस में

टकराने की आवाज आते हैं। फिर यहां इतने बड़े गांव में कभी न कभी तो आपस में झगड़ा व विवाद हुआ होगा। आप ऐसा क्या करते हो कि कोई भी थाने में आकर मुकदमा दर्ज नहीं कराता है। इस पर गांव के धूलजी काका, नाथू काका ने बताया कि यहां पर कोई भी झगड़ा या विवाद होने पर दोनों पक्ष को बुलाकर चौराहे पर आपस में निपटारा कर दिया जाता है। दोनों पक्ष संतुष्ट हो जाते हैं इसलिए कोई थाने में नहीं जाता है। ग्रामीणों ने संकल्प लिया है कि पूरी पंचायत में कोई भी थाने में मुकदमा दर्ज नहीं कराएंगे ऐसी कोशिश करेंगे।



छिमा बड़न को चाहिये, छोटन को उतपात। कह रहीम हरि का घट्यौ, जो मृगु मारी लात।।

अर्थ: बड़ों को क्षमा शोभा देती है और छोटों को उत्पात (बदमाशी)। अर्थात् अगर छोटे बदमाशी करें कोई बड़ी बात नहीं और बड़ों को इस बात पर क्षमा कर देना चाहिए। छोटे अगर उत्पात मचाएं तो उनका उत्पात भी छोटा ही होता है।

- रहीम

रघुनाथ जी के दर्शन फिर होंगे

लाज न लागत आपको, दौरे आयहु साथ।
धिक-धिक ऐसे प्रेम को कत कहुं मे नाथ।।
अस्थि चर्ममट देह मम, तामे ऐसी प्रीती।
तैसी जो श्रीराम मे, छेती न तो भव भीती



गोस्वामी जी ने गृहस्थ वेश त्यागकर साधु वेश धारण कर लिया। काशी में तुलसी दास जी एक स्थान पर नित्य कथा सुनने जाते थे, कथा समाप्त होने पर नगर से बाहर शोच करते और लोटे का बचा हुआ जल एक पीपल की जड़ में छोड़ आते। उस वृक्ष पर एक प्रेत रहता था। नित्य प्रति जल मिलने से वह बड़ा सुखी होता था। एक दिन प्रसन्न होकर तुलसी दास जी से वर मांगने को को कहने लगा। तब तुलसी दास ने अपने मन की अभिलाषा, श्री राम चन्द्र जी के दर्शन की इच्छा उससे प्रकट की प्रेत ने यह सुनकर कहा की भगवान के दर्शन करवाने की सार्मथ्य तो मुझमें नहीं है, पर मैं तुम्हें उपाय बताता हूँ। जहाँ तुम रामायण की कथा सुनने जाते हो वहा नित्य प्रति मैल कुचले ब्रह्मण का वेश धर कर हनुमान जी आते हैं वे सबसे पहले आते हैं और सबसे पीछे जाते हैं वेही तुम्हें रघुनाथ जी के दर्शन करा सकते हैं। दूसरे दिन तुलसी दास ने हनुमान जी को पहचान कर एकांत पाकर उनके चरण पकड़ लिए और अनेक बार मना करने पर भी नहीं छोड़ा। तब हनुमान जी ने प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन दिए और रघुनाथ जी के दर्शनों के लिए चित्रकूट चलने को कहा। मार्ग में उन्हें दो घुड़सवार अत्यंत मनोहर रूप वाले, श्याम गौर वर्ण, के किशोर अवस्था वाले, धनुष बाण धारण किये हुए जाते मिले। तुलसी दास जी उन्हें देखकर मुग्ध हो गए किन्तु पहचान न सके। हनुमान जी द्वारा अपनी भूल ज्ञात होने पर वे बड़े पछताए। तब हनुमान जी ने उन्हें सांत्वना दी की अभी रघुनाथ जी के दर्शन फिर होंगे।

महायोगीश्वर भगवान दत्तात्रेय

जयंती

24 दिसंबर

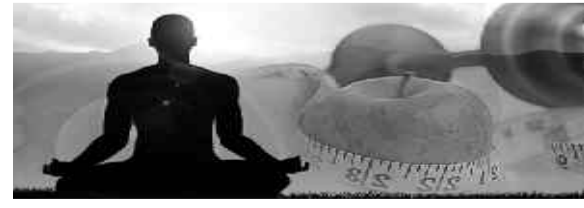


मार्गशीर्ष का महीना विवाह पंचमी, गीता जयंती आदि विशेष पर्वों के कारण महत्व तो रखता ही है साथ ही इस महीने की पूर्णता दत्तात्रेय जयंती के रूप में पूर्णमासी को होने के कारण विशेष महत्व रखता है। सनातन वैदिक उपासना एवं सन्यास धर्म में दत्तात्रेय भगवान का विशेष महत्व है। इस पर्व के दिन सदगृहस्थों के यहां व्रत पूजन तो होता ही है लेकिन दशनाम सन्यासियों के अखाड़ों में विशेष आध्यात्मिक प्रवचन भी चलते हैं जिससे आराधना और साधना से विशेष पुण्य प्राप्त होता है। महायोगीश्वर दत्तात्रेय भगवान विष्णु के अवतार हैं। इनका अवतरण मार्गशीर्ष की पूर्णिमा को प्रदोष काल में हुआ। अतः इस दिन बड़े समारोहपूर्वक दत्त जयंती का उत्सव मनाया जाता है। श्रीमद् भागवत में आया है कि पुत्र प्राप्ति की इच्छा से महर्षि अत्रि के व्रत करने पर 'दत्तो मयाहमिति यद् भगवान् स दत्तः' मैंने अपने-आपको तुम्हें दे दिया-विष्णु के ऐसा कहने से भगवान विष्णु ही अत्रि के पुत्र रूप में अवतरित हुए और दत्त कहलाए। अत्रि पुत्र होने से ये आत्रेय कहलाते हैं। दत्त और आत्रेय के संयोग से इनका दत्तात्रेय नाम प्रसिद्ध हो गया। इनकी माता का नाम अनसूया है, उनका पतिव्रता धर्म संसार में प्रसिद्ध है। पुराणों में कथा आती है, ब्रह्माणी, रुद्राणी और लक्ष्मी को अपने पतिव्रत धर्म पर गर्व हो गया। भगवान को अपने भक्त का अभिमान सहन नहीं होता तब उन्होंने एक अद्भुत लीला करने की सोची।

भक्त वत्सल भगवान ने देवर्षि नारद के मन में प्रेरणा उत्पन्न की। नारद घूमते - घूमते देवलोक पहुंचे और तीनों देवियों के पास बारी - बारी जाकर कहा-अत्रिपत्नी अनसूया के समक्ष आपको सतीत्व नगण्य है। तीनों देवियों ने अपने स्वामियों-विष्णु, महेश और ब्रह्मा से देवर्षि नारद की यह बात बताई और उनसे अनसूया के पतिव्रत की परीक्षा करने को कहा। देवताओं ने बहुत समझाया परंतु उन देवियों के हठ के सामने उनकी एक न चली। अन्ततः साधुवेश बनाकर वे तीनों देव अत्रिमुनि के आश्रम में पहुंचे। महर्षि अत्रि उस समय आश्रम में नहीं थे। अतिथियों को आया देख देवी अनसूया ने उन्हें प्रणामकर अर्घ्य, कंदमूलादि अर्पित किए किंतु वे बोले हम लोग तब तक आतिथ्य स्वीकार न करेंगे जब तक आप हमें अपने गोद में बिठाकर भोजन नहीं कराती। यह बात सुनकर प्रथम तो देवी अनसूया अवाक रह गई किंतु आतिथ्य धर्म की महिमा का लोप न जाए इस दृष्टि से उन्होंने नारायण का ध्यान किया। अपने पतिदेव का स्मरण किया और इसे भगवान की लीला समझकर वे बोलीं- यदि मेरा पातिव्रत्य धर्म सत्य है तो ये तीनों साधु छह-छह मास के शिशु हो जाएं। इतना कहना ही था कि तीनों देव छह मास के शिशु हो रुदन करने लगे। तब माता ने उन्हें गोद में लेकर दुग्ध पान कराया फिर पालने में झुलाने लगीं। ऐसे ही कुछ समय व्यतीत हो गया। इधर देवलोक में जब तीनों देव वापस न आए तो तीनों देवियां अत्यंत व्याकुल हो गईं। फलतः नारद आए और उन्होंने संपूर्ण हाल कह सुनाया। तीनों देवियां अनसूया के पास आईं और उन्होंने उनसे क्षमा मांगी। देवी अनसूया ने अपने पातिव्रत्य से तीनों देवों को पूर्वरूप में कर दिया। इस प्रकार प्रसन्न होकर तीनों देवों ने अनसूया से वर मांगने को कहा तो देवी बोलीं-आप तीनों देव मुझे पुत्र रूप में प्राप्त हों। तथास्तु- कहकर तीनों देव और देवियां अपने-अपने लोक को चले गए। कालांतर में ये ही तीनों देव अनसूया के गर्भ से प्रकट हुए। ब्रह्मा के अंश से चंद्रमा, शंकर के अंश से दुर्वासा तथा विष्णु के अंश से दत्तात्रेय श्री विष्णु भगवान के ही अवतार हैं और इन्हीं के आविर्भाव की तिथि दत्तात्रेय जयंती कहलाती है। भगवान दत्तात्रेय कृपा की मूर्ति कहे जाते हैं। परम भक्त वत्सल दत्तात्रेय भक्त के स्मरण करते ही उसके पास पहुंच जाते हैं। इसीलिए इन्हें स्मृतिगामी तथा स्मृतिमात्रानुगता भी कहा गया है। ये विद्या के परम आचार्य हैं। भगवान दत्तजी के नाम पर दत्त संप्रदाय दक्षिण भारत में विशेष प्रसिद्ध है।

स्वस्थ रहने के उपाय

1. सुबह मे पेट भर भोजन करें। जबकि रात मे बहुत हल्का भोजन करें।
2. रात को खीरा, दही और कोई भी वात उत्पन्न करने वाली चीज न खाये।
3. दही के साथ उड़द की दाल न खाये। जैसे- दही और उड़द की दाल का बना हुआ भल्ला।
4. दूध के साथ नमक या नमक की बनी कोई भी चीज न खाये। क्योंकि ये दोनों एक दूसरे के प्रतिकूल प्रभाव डालती है।
5. दूध या दही से बनी कोई भी दो चीजे एक साथ न खाये।
6. कोई भी खट्टी चीज दूध के साथ न खाये सिर्फ एक खा सकते है आंवला। खट्टे आम का शेक न पिये केवल मीठे पके हुए आम का ही शेक पीये।



- 7 कभी भी घी और शहद का उपयोग एक साथ न करे! क्योंकि दोनों मिलकर विष के समान बनते हैं।
8. खाना भूख से कम ही खाये। जीने के लिए खाना खाये न कि खाने के लिए जीये।
9. रिफाइण्ड तेल जहर हैं

आप हमेशा कच्ची घाणी का सरसो, तिल या मूंगफली का तेल ही उपयोग करे और जीवन मे हार्ट अटेक व जोडो के दर्द से बचे।
10. तला, और मसालेयुक्त खाना खाने से बचे। अगर ज्यादा ही मन हो तो सुबह मे खाये रात मे कभी भी नहीं

गतांक से आगे ...

मानव मन के बोल

मेने अल्पाठी-नोशनलाल जी दक



रामायण जी पढुची अन्यथा शायद भारत अभी से हजारों गुना ज्यादा नास्तिक हो जाता। कल्याण पुनर्जन्मांक बालक अंक, संत अंक उसी समय एक अंक के रूप में रामचरित मानस भी कल्याण के विशेषांक के रूप में ही गीता प्रेस ने प्रकाशित किया था। गीता जी पर भाष्य(टीका) श्रीमद् भागवत महाभारत जी की कथा अग्निपुराण, शिवपुराण, शक्ति पुराण, ईश्वर की महानता, तो ये कालखण्ड सौलह वर्ष का अद्भूत सच्ची सामाजिकता, सच्चा धर्म।
सेवाधर्म महान है,
अति प्राचीन विचार।
सेवारत इंसान ही,
समझा जीवन सार।।

वक्त्र नगनी भीलवाड़ा की यादें

भीलवाड़ा के कालखण्ड 1964 की यात्रा 1964 से 1971 पांच मार्च 1971 की यात्रा कालखण्ड भीलवाड़ा का। अच्छा नगर, परन्तु परम पूज्य भाई साहब राजस्थान इंजिनियरिंग में। मैंने कॉलेज में एडमिशन लिया राजकीय महाविद्यालय भीलवाड़ा अल्फा, बीटा, गामा, ऑफशानल में फिजिक्स, केमिस्ट्री थी और मेथ्स था। बहुत रुचि थी गणित में 100 में से 100 अंक आते थे। केमिस्ट्री में प्रयोगशाला में याद है मुझे टेस्ट ट्यूब में एक में दूसरा केमिकल, दूसरे में दूसरा केमिकल हल्का सा गरम करना।

क्रमश अगले अंक में...

स्वर्ग का रास्ता



जीवन केवल धन कमाने के लिए नहीं, वह धर्म कमाने और पुण्य बढ़ाने के लिए भी है। पुण्य को बढ़ाये बिना जीवन में बरकत संभव नहीं है। धर्म को बढ़ाये धन बढ़ने वाला नहीं है। धन की तृष्णा है। यह काम वासना से भी भयंकर है। धर्म से ही मन की भूख तो तृप्त किया जा सकता है। धर्म फासलों को कम करने के लिए और दीवारों को छोटी करने के लिए है। दीवारें रखिये लेकिन इतनी ऊँची मत रखिए कि अपना भाई और पड़ोसी ही दिखाई न पड़े। अगर तुम्हारे आँगन की दीवार से तुम्हारा भाई और पड़ोसी दिखाई देना बंद हो जाये तो फिर इंसानियत की बात करना बेमानी है। हमें पड़ोसी की जरूरत को भी समझना होगा। हम मन्दिर में सिर्फ देवता की मूर्त और संतों की सूरत ही न देखें बल्कि पड़ोसी की जरूरत भी देखें। अगर हम पड़ोसी की जरूरतों को भी समझ पाएँ। हम सामने वाले की अपेक्षाओं और भावनाओं को समझें, यही स्वर्ग का रास्ता है।

मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग पाना है तो 'आज' को, वर्तमान को स्वर्ग बनाना होगा, जीते जी स्वर्ग को उपलब्ध होना होगा। जो वर्तमान को स्वर्ग न बना पाया वह मर कर क्या स्वर्ग पायेगा ? जो जीता ही नर्क में है वह मर कर क्या खाक स्वर्ग पायेगा। जीवन तो केवल वर्तमान में है। पीछे का जिक्र नहीं, आगे का फिक्र नहीं — बस यही जीवन शैली है जो स्वर्गीय आनंद देती है।

— मुनि तरुण सागर जी

साधना में बल प्राप्त करना है तो करें ये उपाय

- भूख से कम खाना,
- क्रोध में गम खाना,
- मान में नम जाना,
- त्याग में मक्कम रहना और
- शत्रुओं पर सम रहना।

सूक्ष्म और स्थूल का अंतर

उत्तर : जिस प्रकार मेज, कुर्सी, पंखा, बल्ब, ट्यूब, तार स्थूल हैं और इनमें प्रवाहित विद्युत सूक्ष्म है, उसी प्रकार यह शरीर स्थूल है और इस शरीर में बसने वाली आत्मा सूक्ष्म है। स्थूल को आप देख सकते हैं, स्पर्श कर सकते हैं, पर सूक्ष्म को आप केवल अनुभव कर सकते हैं।

जीवन को स्वर्णिम बनाने के सूत्र

जीवन को स्वर्णिम बनाने के तीन सूत्र हैं —1. अपने आपको जानो। 2. अपने आपको मानो। 3. अपने आपसे संतुष्ट रहो।

जो भी कर्म करे, ईमानदारी से करे

एक बार महर्षि कौशिक एक वृक्ष के नीचे तपस्या में लीन थे। उस वृक्ष पर एक चिड़िया बैठी थी चिड़िया ने उन पर बीट कर दी। इससे उनकी तपस्या भंग हो गई। तपस्या भंग होते ही उन्होंने बीट गिरने के कारण की खोज की। नजरें इधर — उधर घुमाई और जब ऊपर देखा तो चिड़िया पर नजर टिक गई। महर्षि की नजर पड़ते ही चिड़िया भस्म हो गई। इससे महर्षि के मन में किसी कोने में अंहकार पैदा हो गया और अंहकार भगवान रहने नहीं देते।

एक दिन महर्षि कौशिक भिक्षा लेने एक नगर में पहुंचे। एक महिला के द्वार पर उन्होंने अलख जगा दी — “ भिक्षाम देहि।” महिला बाहर आई, वह बहुत ईश्वर — भक्त थी, संतो का बड़ा सम्मान करती थी। हाथ जोड़कर बोली — “भगवन् रूकिए, मैं अभी आती हूँ।” यह कहकर महिला अंदर चली गई।

इतनी ही देर में महिला

का पति कुछ काम से घर आ गया। पतिव्रता स्त्रियां सबसे पहले अपने पति की सुख — सुविधा का ध्यान रखती हैं, उसकी सेवा में रहती हैं। वह महिला भी अपने पति की सेवा में लग गई। पति के नहाने के लिए पानी की व्यवस्था की, फिर भोजन बनाया, पति को भोजन कराया। भोजन करने के बाद पति आराम करने के लिए पलंग पर लेट गया और जब तक पति सो नहीं गया, वह उसकी सेवा में लगी रही।

पति की सेवा में इतनी मग्न हो गई कि यह भूल ही गई कि द्वार पर कोई मुनि खड़े हैं। वह भागी — भागी द्वार पर गई और मुनि से बोली — “महाराज, क्षमा करना। मैं पति की सेवा में लग गई थी और यह भूल गई कि आप द्वार पर खड़े हैं।”

मुनि पहले ही क्रोध में थे। महिला द्वारा देरी से भिक्षा लाने पर वे और भी क्रोधित हो गए। बोले —

“तुम जानती नहीं कि मैं कौन हूँ ? मैं द्वार पर भिक्षा के लिए कितनी देर से खड़ा हूँ और तुम हो कि मेरी भिक्षा की परवाह न कर पति की सेवा में लग गई ?”

पतिव्रता स्त्री को किसी मुनि के क्रोध और शाप का भय नहीं होता, क्योंकि उसका अपना आत्मबल दूसरे से कहीं अधिक होता है। जब मुनि द्वारा यह कहने पर कि तुम मुझे नहीं जानती कि मैं कौन हूँ, तब उस महिला ने कहा — “महाराज, मैं जानती हूँ कि आप कौन हैं ? लेकिन मैं वृक्ष पर बैठी हुई चिड़िया नहीं हूँ जिसे आप भस्म कर देंगे।”

यह सुनकर मुनि आश्चर्यचकित हो गए। वे सोचने कि इस महिला को कैसे पता चला कि मेरे देखने मात्र से ही एक चिड़िया भस्म हो गयी थी। यह सोचकर मुनि ने पूछा — “देवी तुम्हें कैसे पता है कि मेरे देखने मात्र से ही चिड़िया भस्म हो गयी थी

?”

वह पतिव्रता नारी बोली — “महाराज, आपने कर्म से सिद्धि प्राप्त की है तो मैंने पतिव्रत धर्म के पालन से सिद्धि प्राप्त की है, इसीलिए मुझे सब पता चल गया। आप अपने कर्म में सिद्ध हैं, मैं अपने कर्म में।”

यह सुनकर मुनि बड़े लज्जित हुए। उनका अंहकार भंग हुआ। कर्म कैसा भी हो, उसमें तन्मयता न हो तो वह फलीभूत नहीं होता। मालिक की सेवा ईमानदारी से की जाए तो मालिक प्रसन्न होता है, ईश्वर की आराधना अपनी 'मे' को हटकर की जाए तो ईश्वर प्रसन्न होते हैं। मालिक और ईश्वर के प्रसन्न होने पर किसी चीज की कमी नहीं रहती, कर्म अपने आप सिद्ध हो जाता है। इसलिये जो भी कर्म करें, ईमानदारी से करें, तन्मयता से करें, सिद्धि अपने आप प्राप्त हो जायेगी, फल अपने आप मिल जाएगा।

- शुगर व ब्लड प्रेशर रोगी कर छः माह बाद गुर्दों की जांच अवश्य कराये।
- शुगर व ब्लड प्रेशर का सही स्थायी उपचार करावाये।
- छोटी-छोटी बीमारियों के लिए अंग्रेजी दवाईयां व दर्द निवारक दवाईयां खाने से परहेज करें।
- हर आदमी को प्यास के

॥ श्रद्धांजलि ॥



श्री भोला शंकर जी पोखरा के स्वर्गवास (दिनांक-18/12/2015) हो जाने पर नारायण सेवा संस्थान परिवार की ओर से भावभिनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

- कैलाश अग्रवाल 'मानव'
- कमला देवी अग्रवाल
- प्रशान्त अग्रवाल • वन्दना अग्रवाल
- जगदीश आर्य • देवेन्द्र चौबीसा



गुर्दों की बीमारी से बचाव के तरीकें

अनुसार पानी अवश्य पीना चाहिए लेकिन बहुत ज्यादा पानी पीने की आदत ठीक नहीं होती है, क्योंकि इससे गुर्दों का अतिरिक्त

कार्यभार बढ़ जाता है।
• दिनचर्या व जीवनशैली को संयमित रखें तथा ज्यादा से ज्यादा प्राकृतिक खान-पान व रहन सहन रखें।

जीवन में सफलता प्राप्त करने का आध्यात्मिक नियम

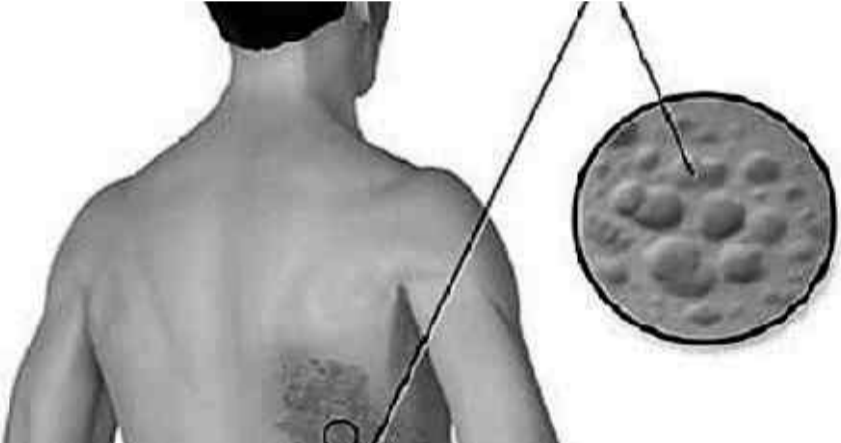
जीवन में सफलता हासिल करने का वैसे तो कोई निश्चित फोर्मूला नहीं है लेकिन मनुष्य आध्यात्मिक नियमों को अपनाकर कामयाबी के शिखर को छू सकता है। कामयाबी हासिल करने के लिए अच्छा स्वास्थ्य, ऊर्जा, मानसिक स्थिरता, अच्छा बनने की समझ और मानसिक शांति आवश्यक है। विशुद्ध सारमथ्य का इस तथ्य पर आधारित है कि व्यक्ति मूल रूप से विशुद्ध चेतना है, जो सभी संभावनाओं और असंख्य रचनात्मकताओं का कार्यक्षेत्र है। इस क्षेत्र तक पहुंचने का एक ही रास्ता है। प्रतिदिन मौन, ध्यान और अनिर्णय का अभ्यास करना। व्यक्ति को प्रतिदिन कुछ समय के लिए मौन बोलने की प्रकिया से दूर रहना चाहिए और दिन में दो बार आधे घंटे सुबह और आधे घंटे शाम अकेले



बैठकर ध्यान लगाना चाहिए। इसी के साथ उसे प्रतिदिन प्रकृति के साथ सम्पर्क स्थापित करना चाहिए और हर जैविक वस्तु की बौद्धिक शक्ति का चुपचाप अवलोकन करना चाहिए। शांत बैठकर सूर्यास्त देखें। समुद्र या लहरों की आवाज सुनें तथा फूलों की सुगंध को महसूस करें। विशुद्ध सारमथ्य को पाने की एक अन्य विधि अनिर्णय का अभ्यास करना है। सही और गलत, अच्छे और बुरे के अनुसार वस्तुओं का निरंतर मूल्यांकन है —'निर्णय'। व्यक्ति जब

लगातार मूल्यांकन, वर्गीकरण और विश्लेषण में लगा रहता है, तो उसके अन्तर्मन में द्वंद्व उत्पन्न होने लगता है जो विशुद्ध सारमथ्य और व्यक्ति के बीच ऊर्जा के प्रवाह को रोकने का काम करता है। चूंकि अनिर्णय की स्थिति दिमाग को शांति प्रदान करती है, इसलिए व्यक्ति को अनिर्णय का अभ्यास करना चाहिए। अपने दिन की शुरुआत इस वक्तव्य से करनी चाहिए— “आज जो कुछ भी घटेगा, उसके बारे में मैं कोई निर्णय नहीं लूंगा और पूरे दिन निर्णय न लेने का ध्यान रखूंगा।”

दाद की बीमारी से रहिये सावधान !



दाद के लक्षण —

- जब शरीर पर लाला रंग के धब्बे, खुजलाहट या फिर सूजन दिखे तो उसको जल्द से जल्द डॉक्टर को दिखा लेना चाहिये, क्योंकि यह रिंगवर्म के संकेत हो सकते हैं। कई बार यह दाग गोल आकार का होता है, जिससे आसानी से समझ में आ जाता है।
- अक्सर दाद छोटे बच्चों को होता है, इसलिये अगर उसके शरीर पर कोई लाल रंग का दाग-धब्बा दिख रहा हो तो तुरंत डॉक्टर के पास उसे ले कर जाएं।
- जॉक खुजली एक तरह का दाद है, जो कि त्वचा की परतों में होता

- है।
- अगर यह रोग हाथ पर होता है तो हाथ पूरी तरह से फूल जाता है, त्वचा पर तेज खुजली होती है और उस पर परत बन जाती है।
- बीमारी का उपाय —
- टीवी पर दाद के अनेक प्रचार आते हैं, लेकिन कभी भी ऐसे ही कोई क्रिम या दवा नहीं खरीदनी चाहिये। इसके लिये हमेशा केमिस्ट या डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिये।
- दाद के पीड़ित रोगी को इस रोग का उपचार करने के लिए सबसे पहले दाद वाले भाग पर थोड़ी देर गर्म तथा थोड़ी देर ठंडी सिंकाई करके, उस पर गीली

- मिट्टी का लेप करना चाहिए। इससे दाद ठीक हो जाता है।
- रोगी व्यक्ति को नीबू का रस पानी में मिलाकर प्रतिदिन कम से कम 5 बार पीना चाहिए और सादा भोजन करना चाहिए।
- संक्रमित त्वचा को हमेशा साफ रखें और ऐसी कोई चीज न पहनें, जिससे त्वचा को परेशानी हो।
- बेड शीट, कपड़े रोज प्रयोग किये जाने वाले सामानों को साफ रखें।
- घर में अगर पालतू जानवर है, तो उनसे दूर रहें, क्योंकि यह अपने शरीर पर फंगस ले कर घूमते रहते हैं।

-: जलमहल :-



जलमहल पानी पर तैरते खूबसूरत शिकारे की तरह लगने वाला एक शानदार ऐतिहासिक स्थल है। जयपुर शहर से लगभग 8 किमी उत्तर में आमेर रोड पर जलमहल स्थित है। मानसागर झील के बीच स्थित इस महल की खूबसूरती बेमिसाल है। इसका निर्माण आमेर में लगातार पानी की कमी के चलते कराया गया था।

जलाशय के साथ साथ सौन्दर्य को बढ़ावा देने के लिए पानी के बीच खूबसूरत महल बनाया गया। जयपुर के राजा महाराजा यहां अवकाश मनाने और गोपनीय मंत्रणाएं करने के लिए आते थे। वर्तमान में यह पर्यटन का प्रमुख केंद्र है। जलमहल तक पहुंचने के लिए शहर से सिटी बसे उपलब्ध है। इसके अलावा

निजी वाहन या टैक्सी से भी यहां पहुंचा जा सकता है। जलमहल के अंदर पहुंचने के लिए नौकाओं की व्यवस्था है। जलमहल को आमतौर पर इसकी पाल से देखा जाता है। लेकिन महल तक नौकाओं के द्वारा पहुंचा भी जा सकता है। यहां दो मंजिला इमारत, खूबसूरत गलियारे, टैरेस गार्डन आदि देखने योग्य जगहें हैं।

रोचक जानकारियाँ

1. विश्व का पहला रिवोल्वर कोल्ट (अमेरिका) ने 1835 में बनाया था
2. एक्वेस्टिक ऐसा पदार्थ है जो आग में नहीं जलता
3. विश्व में बिजली का अविष्कार 1672 में वान गुरिके ने किया था
4. विश्व का रूस ऐसा देश है जिसका एक भाग में शाम और एक भाग में दिन होता है
5. चीन विश्व का ऐसा देश है जिसकी सीमा को तेरह देशों ने घेर रखा है।

किशोर उम्र के बच्चों के भी आत्मसम्मान की रक्षा करें

आत्मसम्मान एक अचूक, किंतु नाजुक उपकरण है। अगर वयस्क लोग किशोर के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाते हैं, चाहे यह लापरवाही या अज्ञानतावश किया गया हो या जानबूझकर, तो वे बुरे प्रभावों का सामना करने की उसकी क्षमता को नष्ट करते तथा उसे अच्छी मिसालों के प्रति उदासीन

बनाते हैं। बच्चा कितना भी गया-गुजरा क्यों ना हो, ज ब त क उ स म े आत्मसम्मान की भावना है, समाज के लिए वह असुधार्य नहीं है, क्योंकि उसे अन्य लोगों और जिस समाज में वह रहता है, उसका आदर करना अभी भी सिखाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, उसके भविष्य के बारे में हम आशावादी रह सकते हैं।

प्रेरक प्रसंग :

परोपकार की भावना

किसी गांव में बरगद का एक पेड़ बहुत वर्षों से खड़ा था। गांव के सभी लोग उसकी छाया में बैठते थे, गांव की महिलाएं त्योहारों पर उस वृक्ष की पूजा किया करती थीं। ऐसे ही समय बीतता गया। और कई वर्षों बाद वृक्ष सूखने लगा। उसकी शाखाएं टूटकर गिरने लगीं और उसकी जड़ें भी अब कमजोर हो चुकी थीं। गांववालों ने विचार किया कि अब इस पेड़ को काट दिया जाये और इसकी लकड़ियों से गृहविहीन लोगों के लिए झोपड़ियों का निर्माण किया जाये।

गांव वालों को आरी — कुल्हाड़ी लाते देख, बरगद के पास खड़ा एक वृक्ष बोला— “दादा! आपको इन लोगों की प्रवृत्ति पर जरा भी क्रोध नहीं आता ये कैसे स्वार्थी लोग हैं जब इन्हें आपकी आवश्यकता थी तब ये आपकी पूजा किया करते थे, लेकिन आज आपको दूटते हुए देखकर काटने चले हैं।”

बूढ़े बरगद ने जवाब दिया— नहीं बेटे! मैं तो यह सोचकर बहुत प्रसन्न हूँ कि मरने के बाद भी मैं आज किसी के काम आ सकूंगा। असल बात यह है कि परोपकारी व्यक्ति सदा दूसरों के प्रति करुणा का भाव रखते हैं और उनकी खुशी और उनके सुख में अपना सुख समझते हैं।

परस्पर समझ की भावना

बच्चों और बड़ों के बीच परस्पर समझ पैदा करने के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि बच्चों को, बड़ों की भाषा तथा बड़ों को, बच्चों की भाषा इस्तेमाल करना सिखाया जाए। यहां तात्पर्य वाक-प्रवृत्तियों, शब्द-भंडार, उच्चारण या वर्तनी से नहीं है, बल्कि इस बात से है कि सामान्यतः स्वीकृत अर्थों की पद्धति के अलावा शब्द मानव चेतना की अन्य सभी परिघटनाओं की भांति ही एक विशेष भाग, एक विशेष व्यक्तिगत अर्थ भी रखते हैं, जो अलग-अलग व्यक्तियों के मामले में अलग-अलग होता है। व्यक्तिगत भाव उससे निर्धारित होता है, जो व्यक्ति की सक्रियता के लक्ष्यों को उसके अभिप्रेरकों से जोड़ता है यानि व्यक्ति की आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करता है।

दुःख के भी फायदे हैं

दुःख में समभाव और समझदारी रखे तो दुःख के पाँच फायदे हैं —

1. दुःख हमें सीधा, सरल एवं विनम्र रखता है।
2. दुःख हमें सुसंस्कारित करता है।
3. दुःख हमें शुद्ध बनाता है।
4. दुःख हमें साधक बनाता है।
5. दुःख हमें सिद्धि दिलाता है।

सुखी रहने का स्थान

संसार के जीव दो जगह सुखी रहते हैं — भगवान के पास और भाग्यवान के पास। इसके अतिरिक्त कहीं भी सुखी रहने का स्थान नहीं है। सर्वत्र दुःख ही दुःख है।

आपकी अपनी नारायण सेवा संस्थान

अन्तर्राष्ट्रीय सेवा सम्मान समारोह
एवं 'निःशुल्क' निःशक्तजन एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह

अवार्ड समारोह : 30 जनवरी, 2016
सामूहिक विवाह : 31 जनवरी, 2016

स्थान : पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, पंजाबी बाग, दिल्ली - 110026
मुख्य सहयोगी श्री एम. एच. डालमिया (श्री डालमिया मानव सेवा ट्रस्ट) नई दिल्ली

शास्त्रोक्त और पौराणिक मान्यता है कि जिनके परिवार में बेटी नहीं है उन्हें धर्म की बेटी बनाकर उसका कन्यादान करना चाहिए... जिससे उन जातक का ईश्वरीय परलोक सुधरता है... उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है... पापों का क्षय होता है... नारायण सेवा लाया है आपके लिए एक पावन अवसर...

विकलांगों की सेवा का अनूठा उपक्रम
मंदबुद्धि बालगोपालों की सेवार्थ संचालित
आवासीय विद्यालय

परें जैसे लाखों बच्चे हैं जिन्हें ज़रूरत है नारायण सेवा जैसे सेवा भावी संस्थान की

परें देख... सुन नहीं सकता तो क्या मेरा हजर बोलंगा

'आपश्री' का सहयोग ऐसे बच्चों के अंधेरे जीवन में दीपक बन कर रोशनी प्रदान कर सकता है।

विकलांग, वृद्ध, विधवा एवं वंचितजनों के विकास हेतु कुन संकल्पित नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर (राज.) लड़खड़ाती जिन्दगियों, खूब मातृ-पितृ समदृश्य-वृद्धों-विधवाओं और बीमा-निर्वाहितजनों की सेवा के लिए सादर अपील करता है, कृपया सहयोग कर कृतार्थ करें।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें 0294-6622222

अपंग, अनाथ, विधवा वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत सेवारत

निःशक्तजनों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए संस्थान द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। आपश्री से सादर प्रार्थना है कि ईश्वरीय कार्य में अपना सहयोग प्रदान करावे-मान्यवर!

मोबाइल / होम एप्लायसंस रिपैरिंग / कम्प्यूटर / सिलाई / महेन्दी / अमरवती हार्डवेयर एण्ड नेटवर्किंग प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	7500/-	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	75,000/-
3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	22500/-	20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	150000/-
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	37500/-	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	225000/-

दवाई सहयोग प्रतिदिन

1 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	1000/-	51 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	51000/-
11 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	11000/-	101 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	101000/-
21 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	21000/-	501 निःशक्त दवाई सहयोग राशि	501000/-

50 रोगियों की आजीवन भोजन / नाश्ता भिती

एक बच्चे को एक माह की शिक्षा सहयोग राशि - 600/-
 एक दिन एक समय की आजीवन भोजन भिती सहयोग राशि - 11,000/-
 एक दिन की आजीवन शाका भिती सहयोग राशि - 5,000/-

आजीवन लालन-पालन योजना 1,00,000/-

आप बन सकते हैं किसी अनाथ निर्धन बच्चे को आजीवन पालनहार। लाख रुपयों का अनुदान करके (एक बच्चा 18 वर्ष तक की आयु तक अथवा 18 वर्ष के बाद भी यदि वह उच्च शिक्षण प्राप्त कर चाहेगा तो संस्थान के सान्निध्य में ही रहेंगे।)

भगवान महावीर बालगृह योजना (बालगृह भोजन भिती)

एक बालक का एक माह का चावल, भोजन सहयोग राशि - 2100/-
 एक बालक का एक वर्ष का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि - 2100 X 12 = 25,200/-

एक बच्चे पर सम्पूर्ण वार्षिक खर्च

भोजन खर्च सहयोग राशि	- 2100 X 12 = 25,200/-	शिक्षा खर्च	- 600 X 12 = 7200/-
स्वास्थ्य सम्बन्धी खर्च	- 2500/-	विविध खर्च (शिक्षण, खेलकूद सामग्री, वस्त्र, चिकित्सा आदि) राशि	- 6900/-
कुल वार्षिक खर्च सहयोग राशि	- 41800/-		

प्रति निःशक्त शिशु सहयोग राशि - 1,51000/-
 सम्पर्क करें-09929534444 E-mail : planning@narayanseva.org

आयकर में छूट-संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 G (आयकर दाता) के लिए 50 प्रतिशत तथा 35 AC के तहत (कम्पनियों, प्रतिष्ठानों के लिए) 100 प्रतिशत कर मुक्त (Tax Exempted)

सेवा के विविध प्रकल्प आपसे दान सहयोग की अपील

कृपया अपने परिजनों या स्वयं की जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ, पृथ्वीतिथि को बनाय पादगा...

ऑपरेटिंग छंटाया	सहयोग राशि	ऑपरेटिंग छंटाया	सहयोग राशि
501 ऑपरेटिंग के लिए	17,00,000	40 ऑपरेटिंग के लिए	1,51,000
401 ऑपरेटिंग के लिए	14,01,000	13 ऑपरेटिंग के लिए	52,500
301 ऑपरेटिंग के लिए	10,51,000	5 ऑपरेटिंग के लिए	21,800
201 ऑपरेटिंग के लिए	07,11,000	3 ऑपरेटिंग के लिए	13,000
101 ऑपरेटिंग के लिए	03,61,000	1 ऑपरेटिंग के लिए	5000

ग्रन्थालय पोलियो व्रत विकलांगों के ऑपरेटिंग हेतु सहयोग राशि

संख्या	सहयोग राशि
1 बच्चे के ऑपरेटिंग हेतु प्राथमिक सौजन्य	1,25,000
1 बच्चे के ऑपरेटिंग हेतु आंशिक सौजन्य	31,800
1 बच्चे के ऑपरेटिंग हेतु दवाइयों सौजन्य	21,800

आपश्री सम्पूर्ण बीमारियों में फल रोने भाई-बहन को नया जीवन देने चाहते हैं तो उनके सम्पूर्ण शब्द विकलांग बच्चों के लिए संस्थान के विनम्रतापूर्वक पर सम्पर्क करें- सम्पर्क सूत्र - 0294-6655555 फैक्स-0294-6655570 Web-www.spdtrst.org, E-mail-info@spdtrst.org

वस्तु	सह. राशि रु. एक नम	सह. राशि रु. 3 नम	सह. राशि रु. 5 नम	सह. राशि रु. 11 नम
विश्वीय साइकल	4,000	12,000	20,000	44,000
खीन चैयर	3,000	9,000	15,000	33,000
नैसिपर्स	1,500	4,500	7,500	16,500
पैसाजी	500	1,500	2,500	5,500

विकलांगों के लिए कुत्रिम अंग, सहायक उपकरण हेतु सहयोग राशि

उपकरण	रुपये	उपकरण	रुपये
कृत्रिम पांच (एचबन्ने)	5100/-	कृत्रिम हाथ	5100/-

आजीवन सौद्विक चरणों राशि 51,000/- आजीवन मदद सहयोग राशि 21,000/-

आपका यह सहयोग संस्थान के कॉर्पोरेट फण्ड में जायेगा जिसका उपयोग निःशक्तजनों की सेवा में होगा

राजस्थान के छह किले विश्व धरोहर में शामिल

पर्यटन स्थल के तीर पर राजस्थान का नाम अब दुनिया में और मशहूर होगा। जयपुर के जंतर मंतर के बाद यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में राजस्थान के छह पहाड़ी किलों को शामिल किया गया है। इन किलों में आमेर, जैसलमेर, गागरोन, चित्तौड़गढ़, कंभलगढ़ और रणथंभौर किलों को चयनित किया गया है। इनका चयन कंबोडिया के नोमपेन्ड शहर में यूनेस्को की विश्व विरासत संबंधी वैश्विक समिति की 37वीं बैठक में किया गया था। राजस्थान के पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग के अनुसार इन किलों का चयन राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का परिणाम है। इस चयन से प्रदेश की ऐतिहासिक धरोहर और स्मारकों को विश्व स्तर पर पहचान मिली है। वर्ष 2010 में जंतर मंतर को विश्व विरासत की सूची में शामिल किया गया था, तभी से राज्य सरकार द्वारा लगातार प्रयास किए जा रहे थे कि प्रदेश के अन्य महत्वपूर्ण किलों एवं स्मारकों को भी इस सूची में शामिल किया जाए।

जीवन का झरना उत्साह

उत्साह हमारे समस्त कार्यों का प्राण है। बिना उसके कार्य करना जैसे जेल की सजा काटना हुआ। यदि उत्साह नहीं तो मानो हम अपने काम को अचूक कर रहे हैं। उसके संपादन में हमारा योग नहीं, उसकी सफल समाप्ति में हमारी आस्था नहीं, हार्दिक दिलचस्पी नहीं। ऐसी स्थिति में वह कार्य हमारे लिए एक बोझ बन जाएगा और उसकी रचना में निर्माण के रास्ते में आनंद नहीं बल्कि एक बोझ की विवशता की अनुभूति रहेगी। आशा एक सशक्त चुंबक है जो अन्वेषण से प्राप्त की जा सकती है। हम अपनी मानसिक शक्ति से आशा को घटा-बढ़ा सकते हैं। मित्र हमें छोड़ दे, संबंधी संकटकाल में हमें छिटका कर कतरा जाए, धन-दौलत के दरवाजे बंद हो कर हमें दरिद्र बना दें, पर अगर आशा ने हमारा साथ नहीं छोड़ा तो वह अंत में हमारी सबसे बड़ी पुत्री सिद्ध होगी। आशा वह कप्तान है जो हमारे जीवन रूमी जहाज को सबसे आखिर में तूफान के हवाले करता है। आशा न रहे तो हमारा शरीर शव के समान है, यही एक शापर ने कहा है-

चाहिए- मुनस्सर मरने में हो जिसकी चम्पीद।।

किसी कार्य में अपने को भूल जाना उसमें केंद्रित हो जाना उसमें अपनी संपूर्ण शक्तियों का वियोग ही उत्साह है। जब तक हम किसी कार्य को अचूक, शिथिल मन, अतमने-उदासीन होकर करते हैं- तब तक हम उसे करते नहीं चलते उससे दूर भागते हैं। कार्य करने में वास्तविक आनंद तो तभी आएगा जब हम उसी कार्य से भरे हों। हमारे मन-प्राणों में यही कार्य बसा हो। हमारे हृदय में उत्साह की बाढ़ आई हुई हो।

नेपोलियन की तमाम सफलताओं का यही रहस्य रहा कि वह न केवल स्वयं उत्साह से भरा रहता था वरन् अपने सैनिकों को भी उसी उत्साह से भर देता था। उसके मन की आग सब में फैल जाती थी। कहते हैं नेपोलियन को युद्ध-क्षेत्र में अपने बीच देख कर शिपाही यों महसूस करते थे जैसे उनकी मदद के लिए नई शक्ति उनमें आ गई हो।

उत्साह ने कई बार बिगड़ते काम बनाए हैं। झरती हुई सेनाओं को क्षण-भर में विजय की ओर मोड़ दिया है। सिंहगढ़ के युद्ध में जब मराठों को हार सामने दिख रही थी तभी एक युवक नायक ने देखा कि बहुत से सिपाही एक सीढ़ी से थक कर किले की दूसरी ओर सुरक्षित स्थान पर जा रहे हैं। उसने उस सीढ़ी को उठा कर फेंक दिया और ललकार कर बोला-“उधर कहीं जाते हो? सीढ़ी तो मैं फेंक चुका हूँ। अब लड़ने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं।” इसके साथ ही वह मुठ्ठी भर सेना मरण के उत्साह से भर गई और युद्ध में विजयी हुई। राजपूतों का इतिहास तो ऐसी घटनाओं से रंगा पड़ा है जब घेरे वीर युवकों ने जान हथेली पर रख कर हजारों शत्रुओं के दौत खड़े कर दिए।

सर्वाथिबिद्धि देने वाली आशा है और सर्वाथिनाशक उथी की दूसरी बहन है निराशा। आशा आत्मा का पंख है, निराशा आत्महत्या की मूक घोषणा है। कोई भी कार्य हम करे उसे पूरी तन्मयता से करें, उसके पीछे पागल होकर करें। उमंगों से भरकर किए जाने वाले ऐसे कार्य से ही यह मजा, वह स्वाद आएगा जो आजमाने हमें अपनी मधुर स्मृति से छेड़ता रहेगा।

सम्पादकीय

चक्रवर्ती सम्राट को पुण्योपासना का शोक कुछ ऐसा लगा कि प्रजा से पुण्य खरीदने लगे! ऐसी तराजू बनाई गई जिसमें किसी के पुण्यों के लेखों का कागज एक पलड़े में रखते ही दूसरे पलड़े में उसके बराबर स्वर्ण मुद्राएं तुल जाती!

विधि ने अपना काम किया, पड़ोस के राजा ने आक्रमण किया, परिणाम में हार मिली चक्रवर्ती सम्राट को! रानी, पुत्र सहित उन्हें रात्रि के अंधेरे में भागना पड़ा! पर, खाने को कुछ नहीं था—साथ! पड़ोसी राज्य में जाकर कुछ मेहनत की, जिससे एक समय की भोजन सामग्री नसीब हुई। रानी भोजन बना ही रही थी

कि एक भिखारी ने दयनीय स्वर्णों में याचना की— भोजन की! सम्राट द्वारा याचना को विनयपूर्वक अस्वीकार करते देख रानी ने कहा— राजन् यदि एक दिन और भूखा रह जायेंगे हम तो इस भूखे का पेट भर जायेगा..... दे दीजिये इसे भोजन!

कुछ दिनों की कठिन यात्रा के बाद राजा ने अत्यन्त चिन्तित होकर रानी से कहा "अब आगे का जीवन कैसे चलेगा? रानी ने सुझाव दिया " अपने कुछ पुण्य यहाँ के नरेश को बेचकर हम कुछ स्वर्ण मुद्राएं लेकर सुखी जीवन जी सकते हैं! राजा को बात अच्छी लगी! सम्राट ने वहाँ के राजा के पास अपनी बात रखी, तो वे

तैयार हो गये, पर यह क्या? सम्राट ज्यों-ज्यों पुण्य का लेखा तराजू में रखते पर पलड़ा हिलता तक नहीं! सभी ओर से घेरती निराशा के बीच रानी को भिखारी को दिया भोजन याद आया, तब लेखा पची पलड़े में पड़ी तो दूसरी ओर सहस्र स्वर्ण मुद्राएं आ गई— पलड़े में। सम्राट ने तुरन्त जान लिया कि वास्तव में पुरुषार्थ द्वारा अर्जित राशि का दान ही सार्थक है!

आदरणीय महानुभावों, आपश्री द्वारा भी जो कठोर परिश्रम द्वारा धन रूपी लक्ष्मी का दान नारायण सेवा संस्थान को दिया जा रहा है, वह ऐसा ही दान है। आप द्वारा दिए गये दान से पशुवत चलने वाले अपने

पांवों पर खड़े हो रहे हैं, जिनके मां-बाप नहीं हैं ऐसे बच्चे सुसंस्कारी एवं विद्या दान अर्जित कर रहे हैं, बेसहारा एवं गरीब बहिनें स्वावलम्बन का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं, वनवासी क्षेत्र के अभाव ग्रस्त दीन हीन बीमार औषधि प्राप्त कर रहे हैं— घर बैठे। सैकड़ों परिवार आजीवन व्यसन मुक्त होकर सम्य एवं सुखी ग्रहस्थ जीवन जी रहे हैं।

आइए, हम भी प्रण लें कि जब तक कुछ भी देने की सामर्थ्य परमात्मा बनाये रखेगा तब तक किसी जरूरतमन्द को निराश नहीं लौटने देंगे!

पन्द्रह दिवसीय निःशुल्क अगरबत्ती प्रशिक्षण का समापन



उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के सेक्टर-4 स्थित मानव मन्दिर में संस्थान द्वारा आयोजित पन्द्रह दिवसीय निःशुल्क अगरबत्ती प्रशिक्षण का समापन हुआ। संस्थान निदेशिका श्रीमती वन्दना अग्रवाल ने बताया कि प्रशिक्षिका रुबिना अंजूम द्वारा असहाय एवं गरीब लोगों को स्वरोजगार उपलब्ध कराने व स्वावलम्बी बनाने के लिए 10 प्रशिक्षणार्थियों को अगरबत्ती उत्पादित करने का प्रशिक्षण दिया। संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि निःशक्तजन, असहाय व जरूरतमंदों के लिए संस्थान में निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण, मोबाईल रिपेयरिंग प्रशिक्षण, सिलाई प्रशिक्षण इत्यादि प्रशिक्षण निःशुल्क करवाए जाते हैं, जिससे निःशक्तजन स्वयं अपने पैर पर खड़े होकर आत्म निर्भर बन सके।

संस्थान द्वारा जरूरतमंदों को ऊनी वस्त्र का वितरण



उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की निदेशिका श्रीमती वन्दना अग्रवाल ने बताया कि ठण्ड के बढ़ते प्रभाव से बचने के लिए नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक-चेयरमैन श्री कैलाश मानव के मार्गदर्शन में शुरू हुए ऊनी वस्त्र वितरण अभियान के तहत उदयपुर जिले की सलूमबर, सराड़ा व गिर्वा तहसीलों के आदिवासी बहुल क्षेत्रीय स्कूलों में ऊनी वस्त्र वितरण किए। उन्होंने कहा कि प्रा.वि. अदवास, प्रा.वि. गुड़ा, प्रा.वि. खाना खेड़ी, प्रा.वि. दवाणा, प्रा.वि. जूड़, प्रा.वि. भारिया, प्रा.वि. केवड़ा, शिक्षाकर्मी प्रा.वि. गरमाला, (सराड़ा), बा.उ.प्रा.वि. टोड़ा, बा.उ.प्रा.वि. करावली, रा.उ.प्रा.वि. घाटी (सलूमबर) प्रा.वि. खेराखेत (डाकन कोटड़ा), रा.प्रा.वि. डांगियों की भागल व रा.मा.वि. गिर्वा स्कूल में 500 कम्बल, 1500 स्वेटर व 3000 बिस्किट के पैकेटों का वितरण किया गया।

श्रद्धा

चैनल पर सीधा प्रसारण

सादर आमंत्रण

अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विमन्दिताओं की सेवा में सतत् सेवारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायताार्थ

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

समस्त अग्रवाल समाज, कोचिन, कैरला

आयोजन तिथि 25 से 31 दिसम्बर 2015

स्थान: अग्रवाल समाज कोचिन, अग्रसेन भवन (राम मंदिर), गुजराती रोड, कोचिन, कैरला

समय : दोप. 03.00 से सांय 06.00 बजे तक

कथा व्यास : छबीले छेल बिहारी जी

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान कराएंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

मुख्य यजमान : श्री पुष्कर दत्त गुप्ता सा. जी

स्थानीय सम्पर्क सूत्र : 0484-2225965, 2220938, 9020643781, 9447026522

संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

:: 'निःशक्तजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::

कैलाश "मानव" मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक नारायण सेवा संस्थान	कमला देवी कोषाध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान
जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान	देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान		

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी...
॥ कृपया सपरिवार अवश्य पधारें ॥

नारायण सेवा संस्थान
भरा भागवान वंचितों में

परम पुण्य मुकुटधर श्री कैलाश 'मानव जी'

अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल

अन्तर्राष्ट्रीय सेवा सम्मान समारोह एवं 'निःशुल्क' निःशक्तजन एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह

स्थान : पंजाबी बाग स्टेडियम रिंग रोड, पंजाबी बाग, दिल्ली

अवार्ड समारोह - 30 जनवरी, 2016 सामूहिक विवाह - 31 जनवरी, 2016

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

गरीब, असहाय, अनाथों को सर्दी से बचाने का एक मानवीय प्रयास

सर्दियाँ आने वाली हैं... 10001 स्वेटर्स का अनुरोध आया है विभिन्न दूरस्थ क्षेत्रों के असहायों का...

10001 स्वेटर दान योजना

आपके स्वेटर सर्दी में ठिठुरते बच्चों को दोगे गर्मी का अहसास

आपश्री स्वेटर्स भेंट करें या 150 रु. प्रति स्वेटर से सहयोग प्रेषित करें स्वीकारें अनुरोध-अपील, पाएं जरूरतमंदों की दुआ...

अधिक जानकारी एवं गर्म कपड़ों का दान करने हेतु करें संपर्क **097849-71754**

अपील

देश में कुछ अच्छी धाराएं चली हैं, जिनमें मुख्य हैं— भ्रूण हत्या बंद हो, बाल विवाह न हो सकें, घर में शौचालय हो, हमारा घर व शहर स्वच्छ हो और प्रसन्नता की बात है कि सभी जन इसमें सहयोगी बन रहे हैं। हमारे जैसे ही ईश्वर पुत्र जो या तो निःशक्तता लेकर पैदा हुए हैं या पैदा होने के बाद निःशक्त हो गए हैं, उनके लिए नारायण सेवा संस्थान ने वर्ष 1995 से 'पोलियो उन्मूलन अभियान' आरम्भ किया। अब तक 2 लाख 60 हजार निःशक्तजन के निःशुल्क ऑपरेशन आप सद्भावी सहयोगियों के सौजन्य से हो पाये हैं। आपश्री भी चाहते ही होंगे की अपने राज्य के निःशक्त खड़े होकर चल पाएं, आपकी-हमारी तरह... तो फिर विलम्ब न करें और आज ही अपनी ओर से 1/11/21/51/101 या इससे अधिक ऑपरेशन की स्वीकृति प्रदान कर निःशक्त भाई-बहिनों को दें नया जीवन।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव' मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़